□□ □□□□□□□

जनसत्ता 14 सतिंबर, 2014: कविताओं में प्राय: प्रेम की पुलकति वसुंधरा का आख्यान रचने वाली पुष्पति अवस्थी हिंदी की सुपरचिति कवयित्री हैं□ उन्होंने प्रवास में रहते हु□ भी भारतीय मन की संवेदना और वैश्वकि चिंता की अनुभूतियों को खूबी से सरिजा है□ वे सूरीनाम में रहीं तो सूरीनामी गंगा को काशी की गंगा सरीखा मान दयिा□ इन दनिों नीदरलैंड में रह रही हैं तो वहां की प्रेमपगी धरती को अपने भीतर रचा-बसा रखा है□ वशि्व के अनेक देशों में यायावरी करती हुई आखरिकार जसि चिंता और संवेदना के तहत वे रचती-बुनती हैं वह उनकी आत्मा की ही उपज है□ उनकी कविताओं में स्त्री का अनुराग भरा चत्ति प्रतबिंबिति होता है तो भारतीय ववृित्त भी, जो समूची वसुधा को अपना नी□ मानती आई है□ शब्दों में रहती है वह संग्रह से पुष्पति अवस्थी ने यह जताने की चेष्टा की है कि वे वशि्व को अपनी कवि-आंखों से नरिखती-परखती हुई धरती के सौंदर्य को अपनी कविताओं में अक्षुण्ण रूप में सहेज लेना चाहती हैं□

दरअसल, भारतीयों के लि□ जो वदिेश है, पुष्पति के लि□ वह भी स्वदेश सरीखा है-आत्मीय और अपना□ वदिेश में भी अपनी पहचान रचने की प्रक्रयिा में वे शब्दों में प्रवेश करती हैं□ पूरी आत्मीयता के साथ उनका अपनापन कविताओं में ध□कता है□ उनकी कविताओं की संरचना लालत्यि के प्रत्ययों से नरि्मति होती है और अक्सर कफियतसारी की हमियती उनकी कविता के पीछे □क चुप्पी-सी छाई रहती है□ लेकनि उनका मौन मुखर होता है□ वे अपने अर्थ खुलने पर बोलती हैं- चुप-चुप-सी रहती हुई□ वे अनायास ही नहीं कहतीं: 'शक्तयिां चुपचाप जन्म लेती हैं/ और अपनी चुप्पी में ही पैदा करती हैं- शक्ति□'

वशि्वनाथ प्रसाद तवािरी ने प्रकृति को देवता का काव्य कहे जाने का उल्लेख करते हु□ पुष्पति की कविताओं में प्रकृति प्रेम की तसदीक की है□ अपनी वशि्व यायावरी के दौरान देश के कोने-अंतरों का भ्रमण करते हु□ पुष्पति ने प्रकृति को कहीं चति्रकार की तरह, कहीं लोकगायक की तरह, तो कहीं वहीं के बाशदिे की तरह उसे उकेरा है□ अपने शब्दों के अंकवार में समेटा है□ मसलन, अमर इंडयिन परवािरों के बारे में उनका □क कवतिांश देखें: 'सघन घन-बीच/ मछली-सी बछिलती तैरती/ जंगली मानसूनी बरसात पीकर जीवन जीती नदयिों में/ अपने जीवन की कुटयिा डाले हु□ जीती है वन जाति□'

ब्राजील के जंगलों का यह दृश्य है तो यूरोप के तीन देशों के संधस्थिल- इटली, फ्रांस और आस्ट्रयिा- पर स्थति नाउदर्स गांव का चति्र उकेरती हुई वे लखिती हैं: 'नाउदर्स के पे□ों में/ फलों की तरह लदी रहती हैं चि□यिां/ जो अपने नी□ बनाती हैं- होटलों के गोखों और छत-ऊपर/ जंगल की प्रमुख नागरकि हैं मधुमक्खयिां/ मौका प□ते ही झपट लेती हैं पर्यटकों पर/ नाउदर्स नविासयिों का गोपालन/ और होटल सेवा प्रमुख जीवन साधन□'

यहां कथा, कोमो झील, झील का अनहद नाद, स्नो बेल्स (बर्फ की घंटयिां), नर्सेस (आत्मरति), ब्राजील की रयिो नीग्रो जैसी प्रकृतपिरक गहरी संवेदनशील कविता□ं हैं, तो त्रनिदिाद और टुबैगो, सेंट लूशयिा और अंजोरे द्वीप पर कविता□ं लखि कर उन्होंने अंतलांतकि महासागर और कैरीबयिाई सागर के इन द्वीपसदृश उतराते द्वीपों का साक्षात प्रस्तुत कर दयिा है□ दरअसल, दो-तीन वर्ष पूर्व प्रकाशति संग्रह 'शैल प्रतमिाओं से' (डच-अंगरेजी-हिंदी) में प्रकाशति 'पृथ्वी' कविता में कवयित्री ने पृथ्वी को उस अकेली औरत के रूप में देखा है, जो जीने का दुख चुपचाप सह रही है□

इधर पृथ्वी पर तरह-तरह के खतरे ब□ हैं□ ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, □क और महायुद्ध की तरफ ब□ती हुई महाशक्तयिां और जलसंकट□ इस चिंता का वतिान वैश्वकि है, जसिमें प्रकृति और उसके सारे उपादान समाहति हैं□ पृथ्वी, स्त्री, बच्चे पुष्पति की प्रकृति के प्राणतत्त्व हैं□ इसी में सृष्टि है,

संवेदना□ है, प्रेम, पी□ा, हर्ष और वषिाद है□ सुख है, सुख के स्वप्न है□ मन के शृंगार का रचाव है, आत्मा के आनंद का व्याख्यान है□ संग्रह में भ्रमण के परभ्रिमण का चाक्षुष आह्लाद है, जीवन और जगत की गूंज है, संवेदना की राग-रागनियिां है और उदासयिां भी□ शब्दों के प्रत आस्थावान क्वयत्रिी शायद इन्हीं तत्त्वों से तादात्म्य महसूस करती है□

प्रकृत से तादात्म्य के साथ-साथ पुष्पति की क्वतिाओं का जीवन और वशि्व की वैचारक्ति से संश्लष्टि रशि्ता है□ वे वभिेदकारी और वभिाजनमूलक वचिारों को कैतुक से परखते हु□ सृजन और नरि्माण के ल□ प्रतशि्रुत दखिाई देती है□ उन्हें यह दुखद लगता है क कोई हमेशा भीतर से छीनता रहता है, इंसान का अपनापन जो हमेशा उसका अपना घोंसला है□ पुष्पति अवस्थी ने इन क्वतिाओं में वदिेशी धरती के मानवीय प्रसंगों को पूरी संजीदगी से समेटा है□ यहां अश्वेत शशि ु के जन्म पर मां का संतोष है तो 'पेट भरों की भूख' में दुनयि की अमटि भूख का □ कलोमहर्षक जायजा भी□

पुष्पति जगह-जगह भारतवंशयिों की पी□ा का आख्यान रचते हु□ भूलती नहीं क सूरीनाम और हालैंड जैसे देशों का नख-शखि भारतीय मजदूरों ने अपने श्रम और पसीने से संवारा है□ □ क ओर मक्बूल फदिा हुसेन की चत्रिकारी, तो दूसरी ओर जाकरि हुसैन का तबलावादन उनकी क्वतिा में गूंजता है□ यूरोप की साइकलि की महमिा का गान है, तो फुटबाल खेल की वरिासत का वैभव भी□ मां की लेगेसी है तो स्त्री का इंद्रधनुष भी भूमंडल के चतुर्दकि उनकी क्वतिाओं के माध्यम से अनुभव होता है□ गर्भ की उतरन में स्त्री होने की व्यथा दर्ज है□ पाश्चात्य और दक्षणि □ शयिाई देशों के युवाओं के ल□ उभर रही दासता-दबोच के तेवर है□ ब्राजील की रयिो नीग्रो नदी की श्यामाभा है, तो न्यूजीलैंड की माओरी जाति (अमर इंडयिन) की ध□ क्ती दास्तान है□ प्रणयगर्भी क्वतिाओं में उनके मन का ब्रह्मांड है□ नवातुर गर्भणिी स्त्री के आह्लाद का अद्भुत उन्माद है□ आल्पस संवाद क्वतिा को प□ते हु□ कोई भी पाठक स्वयं को आल्पस से संवाद करते हु□ अनुभव कर सक्ता है□

अपने अनुभव और संवेदना की आंखों से दुनयि को नहिारते हु□ क्वयत्रिी अक्सर अपनी स्त्री-देह में लौटती और तब जो महसूस करती है वह दुनयि भर की स्त्रयिों की चरतिगाथा लगने लगती है□ वे कहती है: 'औरत की देह ही/ औरत का ताबूत है/ जसिे वह जान पाती है- उम्र ढलने के बाद/ जीवन भर □ क ही यात्रा/ भौतकि ताबूत से दैहकि ताबूत तक□ ' इसी तरह वे □ क ग्रेवयार्ड से गुजरते हु□ सोचती है: 'चलती हुई कारों के उस पार/ मृतकों का ग्रेवयार्ड है/ और इस पार चलते और चलाते हु□ मनुष्यों का जदिा ग्रेवयार्ड□ ' उन्होंने अब तक के प्रवास में कैरेबयिाई धरती की संवेदना को गहराई से महसूस कयिा और औपनवेशकि दासता के इतहिास को जैसे नक्ट से गुजरते हु□ देखा है□ कहना न होगा क वे शब्दों की धातु को पहचानने वाली क्वयत्रिी है और शब्दों की अक्षय देह में ही जैसे दुबककर रहने में गहरे सुकून और संजीवनी का अनुभव करती है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta